ज्ञान एवं निडरता
(KNOWLADGE AND FEARLESS NESS)

डॉ0 ओम प्रकाश सोनी*

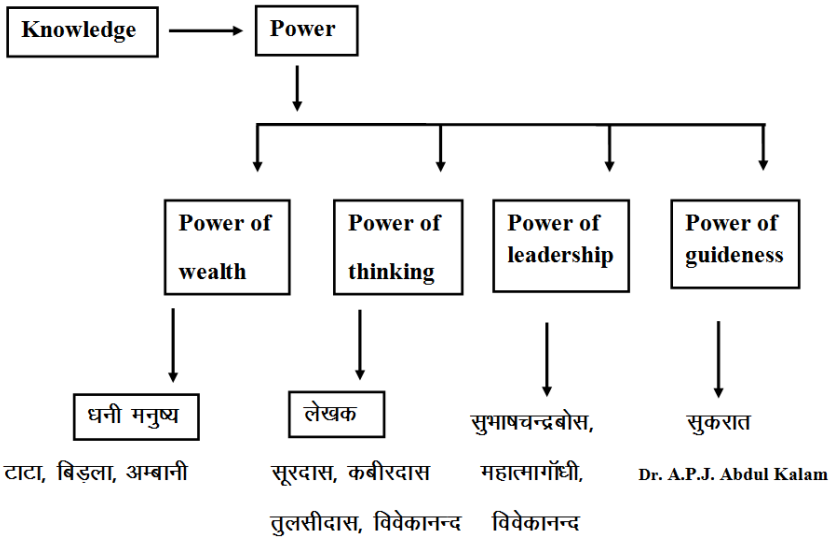
निडरता, शक्ति, सम्पत्ति, मित्र, निर्देशक, मनोवृत्ति

निडरता वह सकारात्मक मनोवृत्ति है, जिसके द्वारा मनुष्य अपनी प्रभावी अभिव्यक्ति को सुनिश्चित करता है। ज्ञान वह महत्वपूर्ण घटक है जो हमें किसी भी व्यवस्था में प्रभावी प्रस्थिति की सुनिश्चित कराता है, यह ज्ञान कभी हमारे विचार के रूप में तो कभी हमारे गुण अथवा योग्यता के रूप में प्रकट होता है। सामान्य रूप से यह देखा गया है कि ज्ञानी व्यक्ति निडर होता है, चाहे वह सुकरात जैसा महाज्ञानी हो, जिसने जहर का प्याला पीकर अपनी निडरता का परिचय दिया, मीराबाई जैसी परमभक्त हों, जिसने विभिन्न नकरात्मक घटकों के बावजूद अपनी प्रभावी अभिव्यक्ति को सुनिश्चित किया। चन्द्रशेखर आजाद, राम प्रसाद बिस्मिल, खुदीराम बोस जैसे विभिन्न स्वतंत्रता सेनानी अपनी निडरता के कारण ही समाज में अपना प्रभावी स्थान सुनिश्चित कर सके, इस प्रकार निडरता और ज्ञान एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से अर्न्तसम्बन्धित है, अर्थात ज्ञानी व्यक्ति निडर होता है, एवं निडरता ज्ञानी व्यक्ति का प्रमुख लक्षण है।

डर मनुष्य की वह मनोवृत्ति है, जो उसके प्रत्यक्ष व्यवहार द्वारा परिलक्षित होती है, सामान्यतया यह देखा जाता है कि जो छात्र कक्षा में सामान्य व्यवहार नहीं करता है, बल्कि सदैव तटस्थ व्यवहार का प्रदर्शन करता है, जिसके कारण वह सामान्य छात्रों के प्रति प्रभावी सामन्जस्य को सुनिश्चित नहीं कर पाता।

मनोवैज्ञानिकों का यह मानना है कि तटस्थ अथवा सुप्त व्यवहार यदि अधिक समय तक रहता है तो छात्र ''डर'' को अपने मन में आत्मसात कर लेता है, और वह व्यक्तिगत एंव सार्वजनिक जीवन में प्रभावी अभिव्यक्ति नहीं कर सकता। डर मनुष्य में समाहित वह नकारात्मक भावना है, जो मनुष्य को ''डरपोक'' बनाती है, इसी भावना के वशीभूत होकर ही मनुष्य समाज में अपनी स्थिति को सुनिश्चित करता है। इसी ''डर'' की भावना के कारण ही मनुष्य सदैव भविष्य के परिवर्तनों की नकारात्मकता को ही स्वीकार करता है, जिसके कारण वह अवसाद ग्रस्त होता जाता है।

ज्ञान एवं शक्ति (KNOWLEDGE & POWER)



* रीडर एवं विभागाध्यक्ष, बी0एड0, किसान पी0जी0 कालेज,बहराइच

इसके विपरीत निडरता की भावना मनुष्य में सकारात्मकता को समाहित करती है, जिसके परिणामस्वरूप वह सदैव उत्साही, जिज्ञासु एवं तत्पर रहता है। निडर व्यक्ति किसी भी नवीन एवं कठिन अवधारणा को समझने के प्रति सदैव जागरूक रहता है, जिसके कारण वह अन्य मनुष्य से अधिक ज्ञानी होता जाता है।

ज्ञान मनुष्य को शक्ति प्रदान करता है, और यह शक्ति उसे विभिन्न स्वरूपों में प्राप्त होती है, जिसे हम धन, विचार, पद, प्रतिष्ठा आदि से सम्बन्धित कर सकते हैं।

(1) Power of Wealth :- ज्ञानी मनुष्य धनी होता है, यह भी कहा जाता है, कि ज्ञान का धन वह अमूल्य घटक है, जिसे कोई चुरा नहीं सकता, यह धन जब बढ़ना शुरू होता है तो इसकी वृद्धि का कोई आंकलन नहीं किया जा सकता। भारत में ज्ञानपीठ पुरूस्कार में नामित होना ही किसी मनुष्य को धन की शक्ति से युक्त कर लेता है, वही विश्व के महान ज्ञान को अभिव्यक्ति करने वाले नोबुल पुरूस्कार से अधिकतम धनराशि प्राप्त होता है। भारत एंव विश्व के तमाम लेखक ऐसे हुए हैं, जिनकी किताबों के रायल्टी/विक्रय से प्राप्त धनराशि इतनी है, जितनी किसी उद्योग से प्राप्त लाभ की धनराशि होता है। **सामान्य रूप से सम्पत्ति का अभिप्राय रूपये अथवा धातुओं से लगाया जा सकता है, किन्तु वर्णमाला में लिखित अक्षरों में वह अपार सम्पत्ति छिपी है, जो किसी भी निर्धन व्यक्ति को धनी बनाकर सफलता के उच्चतम शिखर पर पहुॅचा सकती है।**

(2) Knowledge is Power of Thinking :- ज्ञान मनुष्य में चिन्तन की शक्ति का विकास करती है, क्योंकि जो मनुष्य कितना अधिक ज्ञानी होता है, उतना ही उसमें चिन्तन अथवा अपने नवीन विचार प्रस्तुत करने की शक्ति बढ़ जाती है।

मनुष्य की सभी मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं में चिन्तन सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, चिन्तन के कारण ही मनुष्य ज्ञानी समझा जाता है। चिन्तन वह प्रभावी क्रिया है, जिसे वह निद्रा में भी प्रतिपादित कर सकता है। विज्ञान में बेन्जीन (रासायनिक घटक) की सरंचना का चिन्तन वैज्ञानिक नें निद्रा में ही किया था। चिन्तन एक अदृश्य क्रिया है, जिसका उद्गम स्थल मनुष्य का मस्तिष्क होता है। चिन्तन मनुष्य के समक्ष उपस्थित समस्या से उत्पन्न होने वाली विचारात्मक स्वरूप की प्रतीकात्मक क्रिया है। जब मनुष्य में ज्ञान की प्रवृत्ति बढ़ती है, तो उसमें अपने आप प्रत्यय निर्माण एवं समस्या समाधान की शक्तियों का विकास हो जाता है, शक्ति परिणाम स्वरूप उसके निरन्तर विचारों की शक्ति का विकास होने लगता है। चिन्तन की शक्ति के विकास के फलस्वरूप मनुष्य नवीन समस्याओं की प्रकृति को समझकर उसके प्रभावी समाधान को समुचित तरीके से व्यक्त कर सकता है। चिन्तन मनुष्य की वह प्रभावी शक्ति है, जिसको कोई छीन नहीं सकता और चिन्तन शील व्यक्ति का समाज में जो प्रभावी कार्य सुनिश्चित हो जाता है। इस शक्ति के उदाहरण के रूप में **''सूरदास''** को प्रथमतः देखा जा सकता है, जिन्हें केवल चिन्तन के कारण ही ईश्वर ने अपने भक्ति प्रदान की और आज भी **''सूरदास''** को शक्ति के पुंज के रूप में देखा जाता है। **''कबीरदास''** जी ने अपनी चिन्तन की शक्ति के कारण समाज की विभिन्न अप्रभावी मान्यताओं का खण्डन किया जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक सद्भाव की विभिन्न धाराओं में **''कबीरदास''** जी को संत की उपाधि से विभूषित किया। महान् मनीषी एवं चिन्तक **''तुलसीदास''** जी ने चिन्तन की शक्ति के कारण ही प्रख्यात ग्रन्थ **''रामचरित मानस''** की रचना की जिसे ईश्वर के समकक्ष स्थान प्राप्त है, तथा **''तुलसीदास''** जी को भारतीय जनमानस का सबसे शक्तिशाली व्यक्तित्व कहा जा सकता है। प्रख्यात मनीषी **''स्वामी विवेकानन्द''** जी को उनकी चिन्तन की शक्ति के कारण ही अमेरीका में वह विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ जिसकी कल्पना ही नहीं की जा सकती। इस प्रकार यह पूर्णतया सत्य है कि चिन्तन वह शक्ति है, जिसका प्रार्दुभाव होते ही मनुष्य स्वतः शक्ति से युक्त हो जाता है, और अपने आपको शक्तिशाली समझने लगता है। **इस प्रकार ''ज्ञान और चिन्तन'' शक्ति के महत्वपूर्ण घटकों के रूप में देखे जा सकते हैं।**

(3) Knowledge is Power of Leadership :- नेतृत्व की शक्ति वह शक्ति है, जिसका समावेश मनुष्य में होते ही उसके मनोभावों में परिवर्तन होने लगता है। नेतृत्व की एक विशेषता यह है कि यह आदत के समान परिवर्तनशील नही है, कोई आदत विकसित की जा सकती है, और प्रयास करके

उसे छोड़ा भी जा सकता है, लेकिन नेतृत्व की शक्ति का समावेश होते ही मनुष्य अपने आप सामान्य से विशिष्ट बन जाता है। यद्यपि नेतृत्व की शक्ति का किसी औपचारिक शिक्षा से अधिक सम्बन्ध नहीं है, अर्थात हम यह नहीं कर सकते कि उच्च शिक्षित व्यक्ति नेतृत्व की शक्ति से युक्त होगा ही, सामान्य रूप से जिस मनुष्य के कार्य व्यवहार एवं क्रियाकलापों से व्यक्ति उत्प्रेरित होकर उसके समान बनने एवं उसके कार्यों का अनुकरण करें, यही नेतृत्व की शक्ति है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति यह सीखता है कि देश काल और समाज को ध्यान में रखकर वृत्तियों की तुप्ति की जाये। नेतृत्व की शक्ति यद्यपि जन्म लेने के पश्चात ही परिलक्षित होने लगती है, किन्तु इसका विकास किशोरावस्था के उद्भव के साथ सर्वाधिक प्रभावशाली होता है। नेतृत्व वह प्रवृत्ति है, जिसके कारण प्राणी किसी विशिष्टता की ओर ध्यान देता है, और उसकी उपस्थिति को अपने व्यवहार में आत्मसात करता है। महात्मा गॉधी को तीन प्रमुख घटकों **(सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह)** के ज्ञान के कारण ही नेतृत्व की शक्ति प्राप्त हुई, जिसके आधार पर उन्होनें अपने विशिष्ट नेतृत्व के कारण अपने समर्थकों की इतनी अधिक संख्या एकत्र कर ली, जिसके फलस्वरूप अंग्रेजों को देश छोड़ना पड़ा। **''सुभाषचन्द्र बोस''** वह महान् शक्तिशाली नेतृत्व के प्रतीक कहे जा सकते हैं, जिन्होंने इस शक्ति को सैद्धान्तिक एंव व्यवहारिक ज्ञान के अनुरूप र्अजित किया था, जिसके परिणामस्वरूप उनके समर्थन के अधिकांश लोग तैयार हुए। **''स्वामी विवेकानन्द''** के अमेरीका में ज्ञानात्मक उद्बोधन ने उन्हें इतना शक्तिशाली बना दिया जिसके परिणामस्वरूप समर्थकों की एक बड़ी फौज तैयार हो गयी। **इस प्रकार ज्ञान के द्वारा हमने नेतृत्व की शक्ति का समावेश होता है, जिसके परिणामस्वरूप समस्त उसके कार्यों का अनुकरण एवं समर्थन करने के लिए बाध्य होते है।**

(4) **Knowledge is Power of Guidence :-** निर्देशन अथवा पथ प्रदर्शन करना एक महत्वपूर्ण शक्ति है, जिसका उद्भव सर्वाधिक ज्ञानात्मक योग्यता रखने वाले मनुष्य में हो पाता है। प्रत्येक नेतृत्व की शक्ति से मुक्त मनुष्य दूसरों का मार्गदर्शन कर सके, यह अनिवार्य नहीं है, किन्तु जो मार्गदर्शक है, अथवा निर्देशन की शक्ति से युक्त होता है, उसके अनुयायियों की संख्या अपने आप बढ़ती जाती है। पशुओं और मनुष्यों की निर्देशन की तुलना करें तो हमें यह पता चलता है कि मनुष्यों में निर्देशन करने की शक्ति पशुओं की निर्देशन शक्ति से अधिक महत्वपूर्ण है, यद्यपि पशुओं में निर्देशन की शक्ति का समावेश प्रकृति प्रदत्त होता है, जिसका समावेश करके पशु अपने बच्चों को स्वाभाविक आचरण के लिए प्रेरित करता है। उदाहरण के लिए भोजन की प्राप्ति के लिए अपने बच्चों को निर्देशित करना मनुष्य और पशु दोनों की वृत्ति है, लेकिन मनुष्य में भोजन की प्राप्ति के लिए सकारात्मक निर्देशन की प्रक्रिया को अपनाया जाता है। शिक्षा अथवा ज्ञान के द्वारा मनुष्य यह सीखता है कि देश काल और समाज को ध्यान में रखकर वृत्तियों की सन्तुष्टि की जाये। प्राकृतिक निर्देशन के समावेश के कारण पशु में यह शक्ति जन्म से ही समाहित होती जाती है, जिसके कारण वह जन्म से ही भोजन की तलाश करने लगता है। शिक्षा द्वारा मनुष्य में निर्देशन की शक्ति को प्रभावी तरीके से शामिल करने से ऐसी शक्तियों का उद्भव होता है, जिसके कारण वह स्वयं तथा दूसरों का मार्गदर्शन करता है। निर्देशन की शक्ति के कारण ही व्यक्ति को समाज में अपना स्थान सुनिश्चित करने एंव समायोजन करने में सहायता मिलती है।

निर्देशन की शक्ति से युक्त प्रभावशाली व्यक्तियों में **''सुकरात''** का नाम प्रारम्भिक रूप से लिया जा सकता है, जिन्होंने यह कहा था कि सद्गुण ही सबसे प्रभावी ज्ञान है, और इसकी प्राप्ति के लिए ही छात्रों का निर्देशन किया जाना चाहिए। **''सुकरात''** जीवन भर अपने सिद्धान्तों पर अडिग रहे, जिसके कारण उन्होंने अपने आपको मृत्यु के हवाले कर दिया, निर्देशन की शक्ति के कारण ही **''सुकरात''** विश्व जनमानस के वह प्रभावशाली घटक है। भारत के माननीय महामहिम पूर्व राष्ट्रपति **''डा0 ऐ0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम''**, वह निर्देशन की शक्ति से युक्त हैं, जिन्होनें सपने देखने की शक्ति को विकास की सबसे प्रभावी शक्ति बताया है, यदि हम पशुओं और मनुष्यों की शक्तियों की तुलना करें तो हमें ज्ञात होता है कि मनुष्यों की शक्तियॉ पशुओं की शक्तियों की तुलना में अधिक परिवर्तनशील हैं, इसी कारण शिक्षा एंव ज्ञान के द्वारा मनुष्य की शक्तियों में परिवर्तन किया जा सकता है। ज्ञान मनुष्य को विभिन्न प्रकार की शक्तियॉ प्रदान करता है, जिसके परिणामस्वरूप वह अपने व्यक्तित्व को अत्याधिक प्रभावी एंव

उत्कृष्ट बना सकती है। यह ज्ञान की शक्ति का ही प्रभाव है, जिसके कारण **''सुकरात''** को आज भी बड़े सम्मान से याद किया जाता है। ज्ञान की शक्ति के कारण ही **''बिलगेट्स''** नें अपनी प्रतिभा से सम्पूर्ण विश्व को अलंकृत किया है। **''महात्मा गॉधी''** की शक्ति का प्रमुख स्रोत उनकी **सत्य, अहिंसा, एवं सत्याग्रह** पर आधारित विचारधारा थी। **''सभाषचन्द्र बोस''** ने अपनी सकारात्मक विचारधारा एवं प्रभावशाली शब्दों के कारण ही अपने को इतना शक्तिशाली कर लिया जिसके फलस्वरूप वह भारतीय समाज में स्थापित तो हुए ही, वरन् दूसरे देश में अपनी शक्ति का प्रभावी परिचय दिया। प्रख्यात भारतीय दार्शनिक **''स्वामी विवेकानन्द''** द्वारा प्रतिपादित **(भाइयों तथा बहनों) श**ब्दों की शक्ति नें उन्हें इतना शक्तिशाली बना दिया , जिनकी शक्ति का समर्थन आज भी देश एवं विदेश के नागरिक करते है। **''सुकरात''** द्वारा प्रतिपादित **(सद्गुण ही ज्ञान) श**ब्दों की शक्ति नें उन्हें भारतीय दर्शन जगत का सितारा बना दिया। **''जेम्स वाट''** नें भाप की शक्ति को समझा और जो विश्व पटल पर आज भी आलोकित है। **''कबीरदास, सूरदास, रहीमदास, तुलसीदास**'' भारतीय जनमानस के वह अप्रतिम शक्तिशाली मनुष्य है, जिनके कार्यों के कारण उनकी अनुपस्थिति का बोध नहीं होता। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों एवं क्रान्तिकारियों की आन्तरिक योग्यता उन्हें अत्यधिक शक्तिशाली बना देती थी, जिसके परिणामस्वरूप वे शस्त्रों से युक्त होते हुए भी हार गये। इस प्रकार ज्ञान में वह शक्ति है, जो मनुष्य को इतना अधिक निडर बना देता है, कि वह किसी भी विपरीत परिस्थिति को अपने नियंत्रण में कर सकता है। निडरता वह शक्ति प्रदान करती है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति लौकिक निर्धन होते हुए भी अत्यधिक धनी होता है। निडर मनुष्य किसी भी शस्त्रों से युक्त सेना को अपनी शक्ति से परास्त कर सकता है। निडरता को घटक के समावेश से ही मनुष्य अपने अस्तित्व को सुनिश्चित कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

1— स्वामी विवेकानन्द — ''शिक्षा रामकृष्ण मण धन्तौली'' नागपुर।

2- M.N. Sri Niwas- "Social change in modern India, University of California 1966.

3— राधाकृष्णन— ''भारतीय दर्शन, रात्रपाल एन्ड सन्स'', 1973

4— आर0आर0 रस्क— ''शिक्षा के दार्शनिक आधार'' (अनु0 एस0 के0 ओड), राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

5— जीवन दर्शन— ''मानव सेवा संघ'' बृन्दावन मथुरा, मई 2015

6— सोनी डॉ0 ओ0पी0— ''उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा'' आलोक प्रकाशन, इलाहाबाद।